Preservation Unit
12-8-84
Fumigated
On 8.2.84
Parliament Library

लोक-सभा वाद-विवाद
का
संक्षिप्त अनूदित संस्करण

SUMMARISED TRANSLATED VERSION
OF
4th
LOK SABHA DEBATES

[बारहवां सत्र]

[Twelfth Session]

31.3.71

[खंड 46 में अंक 11 से 20 तक हैं
Vol. XLVI contains Nos. 11 to 20]

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली
LOK SABHA SECRETARIAT
NEW DELHI

मूल्य : एक रुपया

Price : One Rupee

विषय-सूची/CONTENTS

अंक 15, सोमवार, 30 नवम्बर, 1970/9 अग्रहायण, 1892 (शक)
No. 15, Monday, November 30, 1970/ Agrahayana 9, 1892 (Saka)

विषय	Subject	पृष्ठ Page
निधन सम्बन्धी उल्लेख	OBITUARY REFERENCE	
श्री तिरुमल राव का स्वर्गवास	Death of Shri Thriumala Rao	1—2
श्रीमती इन्दिरा गांधी	Shrimati Indira Gandhi	2
डा० राम सुभग सिंह	Dr. Ram Subhag Singh	2
श्री मी० रू० मसानी	Shri M. R. Masani	2—3
श्री बलराज मधोक	Shri Balraj Madhok	3
श्री सेझियान	Shri Sezhiyan	3
श्री उमानाथ	Shri Umanath	3
श्री रवि राय	Shri Rabi Ray	3
श्री इसहाक सम्भली	Shri Ishaq Sambhali	3—4
श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी	Shri Surendranath Dwivedy	4
श्री दत्तात्रेय कुन्ते	Shri Dattaraya Kunte	4
श्री एम० मुहम्मद इस्माइल	Shri M. Muhammad Ismail	4
श्री कृष्ण कुमार चटर्जी	Shri Krishna Kumar Chatterji	4—5

लोक-सभा
LOK SABHA

सोमवार, 30 नवम्बर, 1970/ 9 अग्रहायण, 1892 (शक)
Monday, November 30, 1970/Agrahayana 9, 1892 (Saka)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई ।
The Lok-Sabha met at Eleven of the Clock

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए
Mr. Speaker *in the Chair*]

निधन सम्बन्धी उल्लेख
OBITUARY REFERENCE

श्री तिरुमल राव का स्वर्गवास

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, मुझे सदन को श्री तिरुमल राव के दु:खद निधन की सूचना देनी है। उनका देहावसान कल प्रात: नई दिल्ली में हुआ। वह 69 वर्ष के थे। श्री राव आंध्र प्रदेश के काकिनाडा चुनाव क्षेत्र से चुने गए थे और वर्तमान सभा के सदस्य थे। वह प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी तथा सभा के वरिष्ठतम सदस्यों में से थे। उन्होंने अपना संसदीय जीवन 1937 में उस समय आरंभ किया था जब वह केन्द्रीय विधान सभा में चुने गए थे। 1937 से 1940 तक केन्द्रीय विधान सभा के सदस्य रहने के बाद वह संविधान सभा के तथा 1948-52 के दौरान अस्थायी संसद तथा 1957-67 के दौरान दूसरी तथा तीसरी लोक सभा में चुने गए थे। 1950-52 के दौरान वह खाद्य तथा कृषि उप-मंत्री रहे। 1956 में वे तत्कालीन विंध्यप्रदेश के उपराज्यपाल के पद पर भी रहे।

मैं उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानता था। वह परिश्रमी, गंभीर, अनुभवी तथा सक्रिय संसद विज्ञ थे और उन्होंने कई संसदीय समितियों में भी कार्य किया था तथा समितियों में सभापति के रूप में सभी सदस्यों का भी मार्गदर्शन किया था। प्राक्कलन समिति के सभापति के रूप में उनका योगदान प्रशंसनीय है। कई वर्षों तक वह सभापति-तालिका के सदस्य भी रहे। सरकार द्वारा नियुक्त कई जांच समितियों में भी उन्होंने कार्य किया था।

श्री राव के पास बहुमुखी प्रतिभा थी। वह बुद्धिजीवी और पत्रकार थे और धार्मिक तथा आध्यात्मिक विषयों में रुचि लेते थे। यह मिलनसार थे तथा सर्वदा प्रसन्नचित रहते थे। सभी

उनको चाहते थे और उनका आदर करते थे। वर्तमान सत्र के अधिकांश समय वह हमारे साथ प्रसन्न मुद्रा में रहे और हम यह सोच भी नहीं सकते थे कि इतनी जल्दी वह हमसे अलग हो जायेंगे। हम अपने माननीय मित्र के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं और मुझे आशा है कि सदन उनके शोक संतप्त परिवार के लिए शोक संदेश भेजने में मेरा साथ देगा।

प्रधान मंत्री, अणु-शक्ति मंत्री, गृह-कार्य मंत्री तथा योजना मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी): अध्यक्ष महोदय, जब भी किसी पुराने साथी तथा मित्र का निधन होता है तो हमें बहुत दुःख होता है। एक के बाद एक पुराने वीर पुरुष हमसे विदा हो रहे हैं। जैसाकि आपने कहा कि यह विश्वास ही नहीं होता कि श्री राव हमारे मध्य नहीं रहे। कुछ सप्ताह पूर्व वह व्यस्त रहे और रुग्णावस्था में भी संसदीय तथा राष्ट्रीय मामलों में रूचि लेते रहे।

श्री राव स्वतंत्रता-संग्राम के मुख्य सेनानियों तथा सभा के वरिष्ठतम सदस्यों में से एक थे। वह एक सक्रिय सदस्य थे। 30 वर्ष के सेवा काल में उन्होंने सदन के वाद-विवादों तथा समिति के कार्यों में अभूतपूर्व योगदान दिया। वह अपने उत्तरदायित्वों के प्रति सचेत थे और उन्होंने सदन के औचित्यों को सर्वदा बनाए रखा।

वह हमारी परम्परा के अद्भूत प्रतिनिधि, मृदुभाषी फिर भी दृढ़, सुविज्ञ तथा प्रसन्न प्रकृति के व्यक्ति थे और राष्ट्रीय हितों को दल के हितों से ऊपर रखते थे। यही कारण है कि सदन के सभी सदस्य उन्हें पसंद करते थे और उनका आदर करते थे। उनकी व्यापक रुचि थी और उन्होंने कई संस्थानों का मार्ग-दर्शन किया था।

हमें उनके निधन पर दुःख है। अध्यक्ष महोदय से मेरा अनुरोध है कि वह शोक-संतप्त परिवार को हमारा शोक सन्देश भिजवा दें।

Dr. Ram Subhag Singh (Buxar) : Mr. Speaker, Sir, on behalf of the Opposition, I express deep sorrow on the sad demise of Shri Thirumala Rao and request you to convey our sincere condolences to bereaved family.

As you said, Shri Rao was a senior Member of this House and wherever he worked, it was always his desire to promote the national well-being. His services to the country as a Member of the Central Assembly, the Provisional Parliament, the Lok Sabha and as Lt. Governor of the erstwhile Vindhya Pradesh have been praised by one and all. He was one of those Members who had equal affection for all and maintained friendly relations with everybody throughout. It is difficult to believe that Shri Rao is no more, but he has been snatched away from us by the cruel hands of death at a time when he was needed most. As I have already requested, our sincere condolences may kindly be conveyed to the bereaved family. We pray that the departed soul may rest in peace.

श्री मी० रू० मसानी (राजकोट) : अध्यक्ष महोदय, अपने दल की ओर से मैं आपके तथा सदन के नेता और विरोधी पक्ष के नेता द्वारा व्यक्त किए गये विचारों में शरीक होता हूं। आपने जो कुछ कहा है उसमें कुछ और जोड़ा नहीं जा सकता लेकिन उनके निधन पर मुझे जो दुःख हुआ है, उसकी अभिव्यक्ति मैं थोड़े शब्दों में करूंगा।

जैसाकि माननीय प्रधानमंत्री ने अभी बताया, परिचित व्यक्ति विदा हो रहे हैं और इस घटना पर स्वतंत्रता-पूर्व की पीढ़ी के व्यक्ति अपने आप को अनाथ अनुभव कर रहे हैं।

श्री राव को मैं गत 23 वर्षों से जानता था जब वह संविधान सभा के सदस्य बने थे। उस दिन से अब तक सदन में यद्यपि हमने कई विषयों पर अलग-अलग मत प्रकट किया फिर भी हमारे सम्बन्ध सर्वदा मैत्रीपूर्ण रहे। हम सदन में कहीं भी बैठे हों, परन्तु उनका व्यवहार हमारे सबके साथ एक समान ही रहता था। जो कुछ भी कहा गया है, मैं और मेरा दल उससे सहमत है और पुराने साथी के निधन पर सदन द्वारा प्रकट किए शोक में हम भी शरीक हैं।

Shri Bal Raj Madhok (South Delhi) : Mr. Speaker, Sir, with the passing away of Shri Rao, we have lost yet another senior and old leader of this House. Death is the ultimate density of man, but the number of members who keep the interest of the country above that of the party is becoming smaller. When a Member like him leaves, not only the House becomes poorer, but the whole country suffers. Only last week, I was in Kakinada, the Constituancy of Shri Rao. I was so happy to find that Shri Rao was respected there by all shades of people. We have been associated with him for the last many years. He was always cheerful, expressed his views with great sobriety and also gave us guidance. In fact, he was a guide to the younger Members.

For the last two years, he looked disturbed. There was reason for that, but he hesitated to express it. It was clear that he was torn with an inner conflict. During these days, we had discussions with him and I cannot say whether that inner conflict was also one of the reasons for his sad demise. Whatever may be the reason, the passing away of an old colleague from our midst is a matter of great sorrow. On this occasion I, on behalf of my party, express my heartfelt condolence and I hope that the Speaker will kindly convey our sincere condolences to the bereaved family.

श्री सेझियान (कुम्बकोणम) : अध्यक्ष महोदय तथा सदन के नेता द्वारा प्रकट किए गए विचारों में मैं और मेरा दल शरीक होता है।

श्री तिरुमल राव पुराने स्वतंत्रता सेनानी तथा वरिष्ठ संसद शास्त्री थे। सदन के सदस्य उनका सम्मान करते थे जिस भी दल में उन्होंने कार्य किया और जो भी विचार प्रकट किए उसमें उन्होंने गम्भीरता और संयम से काम लिया और सदन के सभी वर्गों और सदस्यों से सम्मान प्राप्त किया।

मेरा अनुरोध हैं कि अध्यक्ष महोदय मेरे दल की ओर से शोक संतप्त परिवार को हमारी संवेदना पहुंचा दे।

श्री उमानाथ (पुद्दूकोटै) : अपने दल की ओर से मैं श्री राव के दुःखद निधन पर व्यक्त किए विचारों में शरीक होता हूँ। अध्यक्ष महोदय से मेरा अनुरोध है कि वह शोक संतप्त परिवार तक हमारी संवेदना पहुँचा दें।

Shri Rabi Ray (Puri) : Mr. Speaker, Sir, I associate myself and my party with the feelings expressed by you, the Leader of the House, and the Leader of the Opposition on the passing away of Shri Thirumal Rao. Shri Rao was an hon. Member of this House and he had been here for the last 37 years. He was a veteran leader of our freedom struggle and his demise is a great loss both for the country and the Parliament. I request you to convey our condolences to the bereaved family.

Shri Ishaq Sambhali (Amroha) : Mr. Speaker, Sir, I associate my Party and myself with the sentiments expressed by the various leaders in the House on the demise of Shri Thirumal Rao. The sudden death of Shri Thirumal Rao is a shock which cannot be forgotten easily. Only a few leaders of our freedom struggle are left with us now, and when anyone of them passes away, it appears that a page of history has been removed.

He was not only one of the leaders of the national movement but was a good colleague, friend and guide. I had occasion to work with him in the Estimates Committee. Sometimes we differed in our views on some matters, but in the end he was able to bring unanimity ; either he would accept our views or would bring us round. We worked there like members of a family.

I express my condolences on behalf of my party and myself and hope that you would convey the same to the bereaved family.

श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी (केन्द्रपाड़ा) : मैं और मेरा दल विद्वान श्री तिरुमल राव के दुःखद निधन पर व्यक्त किये गये विचारों में शरीक होते हैं। हम कई वर्षों से एक दूसरे से परिचित थे। शूरवीर स्वतंत्रता-संघर्ष सेनानी और पुराने संसद-शास्त्री होने के नाते वह सभा में और सभा के बाहर बढ़ रही अनुशासनहीनता के कारण बहुत दुःखी थे और चिन्तित थे।

यद्यपि कई विषयों पर उनका कई सदस्यों से मतभेद था फिर भी वह प्रसन्नमुद्रा में रहते थे और हम सबके साथ और सदन के उन सदस्यों के साथ, जो उनसे परिचित थे, मैत्रीपूर्ण सम्बंध रखते थे।

उन्होंने कई रूपों में देश की सेवा की। संसद की समितियों तथा प्रशासनिक कार्यों दोनों में उन्होंने देश की बहूमूल्य सेवा की।

देश की नाजुक स्थिति के समय हमें ऐसे साथी के निधन पर गहरा दुःख है। हमें उनके निधन पर दुःख है तथा अध्यक्ष महोदय से मेरा अनुरोध है कि वह उनके शोक-संतप्त परिवार को हमारी संवेदना पहुँचा दे।

श्री दत्तात्रेय कुन्टे (कोलाबा) : श्री राव के दुःखद निधन पर व्यक्त किए गए विचारों में मैं और मेरा दल शरीक होता है। श्री तिरुमल राव एक स्वतंत्रता सेनानी थे और बाद में वे योग्य संसदशास्त्री के रूप में प्रसिद्ध हुए। उन्होंने वे परम्पराएं ग्रहण कीं जो उन्हें संसद-शास्त्री होने के नाते करनी चाहिए थीं। उनके निधन से सदन को गहरी क्षति पहुँची है और देश ने एक महान स्वतंत्रता-सेनानी खो दिया है। सदन द्वारा संवेदना भेजने में मैं भी शरीक होता हूं।

श्री एम० मुहम्मद इस्माइल (मंजरी) : अध्यक्ष महोदय, श्री तिरुमल राव सरल और शांत स्वभाव के व्यक्ति थे। वे प्रसन्न मुद्रा में रहते थे और प्रत्येक व्यक्ति जो उनसे मिलता था उससे मीठा बोलते थे। उन्होंने युवावस्था में स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और कई बार जेल गए। फिर भी उनके चरित्र की मिलनसार प्रकृति इस अनुभव से किंचित मात्र भी परिवर्तित नहीं हुई। वह प्रत्येक व्यक्ति का भला चाहते थे और जिससे मिलते, उसके साथ घनिष्ठ हो जाते थे। मद्रास में पत्रकार के पद पर कार्य करते हुए भी उन्होंने अपने विरोधियों के प्रति कभी भी कड़ा शब्द नहीं कहा।

सदन तथा समाज को उनके निधन से गंभीर हानि हुई है। उनके निधन पर सदन में व्यक्त किए गए विचारों में मैं और मेरा दल भी शरीक होते हैं। मेरा अनुरोध है कि मेरे दल की संवेदना शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचा दी जाए।

श्री कृष्ण कुमार चटर्जी (हावड़ा) : अध्यक्ष महोदय, यद्यपि यह सदन की परम्परा रही है कि दुःखद अवसरों पर केवल दलों के नेता ही बोलते हैं परन्तु क्योंकि श्री तिरुमल राव मेरे

मित्र, दार्शनिक और कई राजनीतिक तथा व्यक्तिगत मामलों में मेरे मार्गदर्शक थे, इसलिए मेरा आपसे अनुरोध है कि आप मुझे कुछ शब्द कहने की अनुमति दें। देश में धीरे-धीरे प्रख्यात नेताओं की विशिष्ट मंडली समाप्त होती जा रही है और महान व्यक्तियों के बारी-बारी चले जाने के परिणामस्वरूप हम आतंकित हैं। वे हर दृष्टि से महान् थे। वे विनीत थे परन्तु नीति सम्बन्धी विषयों पर विचार करते समय वे दृढ़प्रतिज्ञ रहते थे। हमें उनके निधन पर गहरा शोक है। हमने न केवल प्राक्कलन समिति का सदस्य तथा महान् संसद-शास्त्री खो दिया है बल्कि हम एक महान् व्यक्ति, जो कि हृदय के धनी और अच्छी बातों के उपदेशक थे, से हाथ धो बैठे हैं। जब भी मैं अपने राज्य की परिस्थितियों से चिन्तित होता था तो वह ही एक व्यक्ति थे जो मुझे निराशावादी विचारों के वशीभूत न होने के लिए उत्साह प्रदान करते थे। कुछ दिन पहले जब मैंने देश की स्थिति के बारे में उनसे चर्चा की तो उन्होंने मुझको कार्य करते रहने का उत्साह बंधाया। राजनीतिक धारणाओं के साथ-साथ उनमें दृढ़ आध्यात्मिक धारणाएं भी विद्यमान थीं। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे क्योंकि मैं जानता हूं कि देश की स्थिति से वह चिंतित थे।

अध्यक्ष महोदय : हम आदर के नाते कुछ देर के लिए मौन खड़े होंगे।

सदस्य कुछ देर के लिए मौन खड़े हुए।

The Members then stood in silence for a while.

अध्यक्ष महोदय : दिवंगत आत्मा के आदर के नाते सदन बुद्धवार, 2 दिसम्बर, 1970 तक स्थगित होता है। मेरे कक्ष में सदन के नेताओं की आज होने वाली बैठक 2 दिसम्बर अपराह्न को होगी।

इसके पश्चात् लोक सभा बुद्धवार, 2 दिसम्बर, 1970/11 अग्रहायण, 1892 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the clock on Wednesday, the 2nd December, 1970/Agrahayana 11, 1892 (Saka)

Akashdeep Printers, 20 Daryaganj, Delhi-6.